विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

डॉ. प्रीति सिंह
सहायक प्राध्यापक
अध्यापक शिक्षा संस्थान
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय
रायपुर, छ.ग.

शोध सार -

प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया हैं। अध्ययन हेतु छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में स्थित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा ग्यारहवीं में अध्ययरत विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श स्तरीकृत विधि से किया गया हैं। विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता का मापन करने के लिए सूद एवं आनंद द्वारा निर्मित शैक्षिक चिंता सूची एवं शैक्षिक उपलब्धि का मापन विद्यार्थियों के द्वारा पूर्व कक्षा में प्राप्त किए गए प्राप्तांको के आधार पर किया गया हैं । प्राप्त आंकड़ों का सांख्यकीय विश्लेषण एक दिश प्रसरण विश्लेषण से करने पर परिणाम प्राप्त हुआ कि शहरी क्षेत्र में स्थित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा ग्यारहवीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पाया गया हैं एवं ग्रामीण क्षेत्र में स्थित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा ग्यारहवीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया हैं।

बीज शब्द - शैक्षिक चिंता, शैक्षिक उपलब्धि, कक्षा ग्यारहवीं, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, शहरी क्षेत्र, ग्रामीण क्षेत्र।

प्रस्तावना -

वर्तमान समय में शिक्षा प्राप्त करने में विद्यार्थी अधिक परिश्रम करते हैं। उनकी कोशिश शत प्रतिशत अंक प्राप्त करने की होती है। विद्यार्थी अपने शैक्षिक प्रदर्शन के प्रति चिंतित दिखाई देते हैं, विद्यार्थियों की सफलता का आकलन उनकी शैक्षिक उपलब्धि से किया जाता है। शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य छात्रों के द्वारा शिक्षा के क्षेत्र या अपने विषय में विशिष्टता प्राप्त करने से हैं। अनेक अध्ययन से ज्ञात होता है कि छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि पर अनेक कारक का प्रभाव पड़ता हैं, जैसे - बुद्धि, शिक्षकों की उम्मीद, अहं शक्ति, चिंता,

सामाजिक - आर्थिक स्तर आदि। छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव में एक महत्वपूर्ण कारक शैक्षिक चिंता हैं। शैक्षिक चिंता छात्रों में भविष्य में भय के प्रति आशंका के कारण उत्पन्न होती हैं, जिसमें वे अपने शिक्षा के प्रति चिंतित होते हैं। चिंता का सामान्य स्तर छात्रों में होना स्वाभाविक हैं इससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि अच्छी रहती है। बैण्डुरा 1997 के अध्ययनों से स्पष्ट हुआ है कि अधिकांश शैक्षिक रूप से दृढ़ उपलब्धि वाले छात्रों में चिंता का सामान्य स्तर पाया गया, परन्तु छात्रों में चिंता का स्तर सामान्य से अधिक होने पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि बुरी तरह प्रभावित होती है। पी.सेठ ने भी ज्ञात किया कि चिंता से शैक्षिक उपलब्धि उच्च से निम्न हो जाती है। एस.शर्मा ने भी बताया कि विद्यालय तथा महाविद्यालय दोनों ही के छात्रों का शैक्षिक निष्पादन चिंता के उच्च स्तर से कम हो जाता हैं। शैक्षिक चिंता के उच्च, मध्यम, निम्न स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव को ज्ञात करने के लिए अध्ययन की आवश्यकता अनुभव की गई।

संबंधित शोध अध्ययन -

श्रीदेवी (2013) ने उच्च माध्यमिक छात्रों की सामान्य चिंता,परीक्षा चिंता और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का एक अध्ययन कर निष्कर्ष प्राप्त किया कि उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों की परीक्षा चिंता और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य एक नकरात्मक निम्न सहसंबंध हैं।

दास, हल्दर एवं मिश्रा (2014) ने माध्यमिक स्तर के स्कूली छात्रों के शैक्षिक चिंता और शैक्षिक उपलब्धि पर एक अध्ययन करके निष्कर्ष में कहा कि छात्राओं में लड़कों की तुलना में शैक्षिक चिंता अधिक हैं। शैक्षिक चिंता और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक नकरात्मक संबंध है।

शकिर (2014) ने शैक्षिक उपलब्धि के एक सहसंबंध के रूप में शैक्षिक चिंता का अध्ययन किया। निष्कर्ष प्राप्त किया कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और शैक्षिक चिंता के मध्य सार्थक संबंध हैं।

दत्ता एवं गोगई (2015) ने शैक्षिक उपलब्धि पर शैक्षिक चिंता का प्रभाव पर अध्ययन किया। निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, शैक्षिक चिंता से प्रभावित हैं एवं शैक्षिक चिंता और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य उच्च नकरात्मक सहसंबंध हैं।

खातून (2017) ने शैक्षिक उपलब्धि के सहसंबंध के रूप में शैक्षिक चिंता : लिंग के आधार पर अध्ययन किया और परिणाम में कहा कि निम्न और उच्च स्तर की शैक्षिक चिंता वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया और इसी प्रकार निम्न और उच्च स्तर की शैक्षिक चिंता वाले छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। निष्कर्ष में यह अनुमान लगाया कि शैक्षिक क्षेत्र में उत्कृष्टता

प्राप्त करने के लिए मध्यम स्तर की चिंता की आवश्यकता होती है और जब चिंता शैक्षिक सीमा को पार कर जाती है तो उपलब्धि काफी कम हो जाती है।

राव एवं चतुर्वेदी (2017) ने लिंग एवं स्थानीयता के संबंध में माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के शैक्षिक चिंता का अध्ययन किया। निष्कर्ष में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर पाया गया।

अजीम (2018) ने माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मध्य शैक्षिक चिंता और शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया। निष्कर्ष से ज्ञात हुआ कि शैक्षिक चिंता एवं शैक्षिक उपलब्धि में नकरात्मक सहसंबंध हैं।

शर्मा एवं शकिर (2019) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के शैक्षिक चिंता का अध्ययन स्थानीय और विद्यालय के प्रकार के संबंध में किया एवं परिणाम प्राप्त किया कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर पाया गया। ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की तुलना में शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में शैक्षिक चिंता अधिक थी।

नारायणस्वामी (2019) ने नौवीं कक्षा के स्कूली बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि और शैक्षिक चिंता के बीच संबंध का अध्ययन करके ज्ञात किया कि नौवीं कक्षा के स्कूली बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि और शैक्षिक चिंता के बीच एक महत्वपूर्ण नकरात्मक संबंध था।

रहमान, जावेद एवं अबिओदुल्लाह (2021) ने लाहौर में माध्यमिक विद्यालय स्तर में शैक्षिक उपलब्धि पर परीक्षा चिंता का प्रभाव का अध्ययन कर निष्कर्ष में कहा कि परीक्षा चिंता और शैक्षिक उपलब्धि के बीच एक नकरात्मक सहसंबंध है। चंचल, दीपाली एवं अमिता (2021) ने अपने अध्ययन में कहा कि छात्र और छात्राओं के शैक्षिक चिंता और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नही पाया गया हैं। इसी प्रकार छात्र और छात्राओं के शैक्षिक चिंता में भी कोई महत्वपूर्ण अंतर नही पाया गया हैं।

हसन एवं रवि (2022) ने माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की परीक्षा चिंता और शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध का अध्ययन करके निष्कर्ष में बताया कि आंध्र प्रदेश के प्रकाशम जिले में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की परीक्षा चिंता और शैक्षिक उपलब्धि के बीच सार्थक सकरात्मक संबंध हैं।

अध्ययन का उद्वेश्य -

- शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पाये जाने वाले प्रभाव को ज्ञात करना ।
- ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पाये जाने वाले प्रभाव को ज्ञात करना ।

समस्या का कथन - विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पाये जाने वाले प्रभाव का अध्ययन करना ।

अध्ययन की परिकल्पना -

H_1 - शहरी क्षेत्र में स्थित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा ग्यारहवीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पाया जाएगा ।

H_2 - ग्रामीण क्षेत्र में स्थित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा ग्यारहवीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पाया जाएगा ।

अध्ययन का सीमांकन -

- प्रस्तुत अध्ययन कक्षा ग्यारहवीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता के अध्ययन तक सीमित हैं।
- प्रस्तुत अध्ययन कक्षा ग्यारहवीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन तक सीमित हैं।
- प्रस्तुत अध्ययन कक्षा ग्यारहवीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता का शैक्षिक उपलिब्ध पर प्रभाव के अध्ययन तक सीमित हैं।
- प्रस्तुत अध्ययन छ.ग. राज्य के दुर्ग जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में स्थित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक चिंता एवं शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन तक सीमित हैं।

शोध विधि - प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श - न्यादर्श चयन हेतु दुर्ग जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में स्थित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से विद्यार्थियों का चयन असमानुपातिक स्तरीकृत न्यादर्श विधि द्वारा किया गया हैं।

शोध उपकरण - कक्षा ग्यारहवीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता का मापन करने के लिए सूद एवं आनंद द्वारा निर्मित शैक्षिक चिंता सूची का प्रयोग किया गया हैं। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मापन उनके द्वारा पूर्व कक्षा में प्राप्त किए गए प्राप्तांको के आधार पर किया गया हैं।

अध्ययन के चर - प्रस्तुत अध्ययन में शैक्षिक चिंता एवं शैक्षिक उपलब्धि स्वतंत्र चर हैं एवं शहरी क्षेत्र, ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय में कक्षा ग्यारहवीं में अध्ययन करने वाले विद्यार्थी आश्रित चर हैं ।

सांख्यकीय विश्लेषण एवं परिणाम - प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु एक दिश प्रसरण विश्लेषण का प्रयोग किया गया है ।

H_1 - शहरी क्षेत्र में स्थित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा ग्यारहवीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पाया जाएगा ।

सारणी क्रमांक - 1

क्रमांक	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	प्रामाणिक त्रुटि
1.	उच्च स्तर की शैक्षिक चिंता	64	62.59	12.49	1.56
2.	मध्यम स्तर की शैक्षिक चिंता	49	68.83	12.87	1.83
3.	निम्न स्तर की शैक्षिक चिंता	52	72.86	12.91	1.79

सारणी क्रमांक - 1.1

एक दिश प्रसरण विश्लेषण सारांश

प्रसरण का स्त्रोत	वर्गो का योग	स्वतंत्रता की कोटि	मध्यमान वर्ग प्रसरण	F - अनुपात
Between Groups (अन्तर समूह)	3119.423	2	1559.712	9.62
Within Groups (अन्त: समूह)	26242.19	162	161.9888	
Total कुल	29361.61	164		

.01 सार्थक स्तर पर स्वीकृत

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव को ज्ञात करने के लिए आंकड़ों का एक दिश प्रसरण विश्लेषण करने पर F का मान 9.62 प्राप्त हुआ हैं, जो कि स्वतंत्रता की कोटि 162 के 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 4.75 से अधिक है। जिससे ज्ञात होता है कि एफ अनुपात का मान सार्थक है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र में स्थित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा ग्यारहवीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पाया गया। अत: परिकल्पना H_1 स्वीकृत होती है।

H_2 - ग्रामीण क्षेत्र में स्थित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा ग्यारहवीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पाया जाएगा ।

सारणी क्रमांक - 2

क्रमांक	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	प्रामाणिक त्रुटि
1.	उच्च स्तर की शैक्षिक चिंता	61	61.40	10.47	1.34
2.	मध्यम स्तर की शैक्षिक चिंता	28	65.32	13.34	2.52
3.	निम्न स्तर की शैक्षिक चिंता	43	66.30	10.24	1.56

सारणी क्रमांक - 2.1

एक दिश प्रसरण विश्लेषण सारांश

प्रसरण का स्त्रोत	वर्गो का योग	स्वतंत्रता की कोटि	मध्यमान वर्ग प्रसरण	F - अनुपात
Between Groups (अन्तर समूह)	682.4023	2	341.2012	2.78
Within Groups (अन्त: समूह)	15797.93	129	122.4646	
Total	16480.33	131		

.01 सार्थक स्तर पर अस्वीकृत

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव को ज्ञात करने के लिए आंकड़ों का एक दिश प्रसरण विश्लेषण करने पर F का मान 2.78 प्राप्त हुआ हैं, जो कि स्वतंत्रता की कोटि 129 के 0.01 साार्थकता स्तर पर सारणी मान 4.78 से कम है। जिससे ज्ञात होता है कि एफ अनुपात का मान सार्थक नहीं है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र में स्थित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा ग्यारहवीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। अत: परिकल्पना H_2 अस्वीकृत होती है।

निष्कर्ष - प्रस्तुत अध्ययन में शहरी क्षेत्र में स्थित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा ग्यारहवीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पाया गया हैं। कक्षा ग्यारहवीं में विद्यार्थियों के द्वारा विषय का चयन करने में उनके माता -पिता की अहम भूमिका होती है। अध्ययन के लिए बच्चों को ऐसे विषय का चयन करने को कहा जाता है जिसमे अच्छी नौकरी मिलने की संभावना रहती है। शहर में रहने वाले अशिकांश लोग नौकरी पेशा होते हैं। अच्छे प्राप्तांक होने पर नौकरी जल्दी मिल जाएगी यह बात विद्यार्थियों को घर के लोगो के द्वारा एवं अन्यों के द्वारा कही जाती हैं। माता - पिता भी अपने बच्चों की पढ़ाई का निरीक्षण करते रहते हैं। अपने बच्चों को पढ़ने के लिए प्रेरित करते रहते हैं। इसलिए कहा जा सकता है कि विद्यार्थी शिक्षा के प्रति चिंतिंत रहते हैं जिसका प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर देखा जाता है। ग्रामीण क्षेत्र में स्थित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा ग्यारहवीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। इसका कारण यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र में कृषि आज भी प्रधान व्यवसाय है। साथ ही अन्य पारिवारिक व्यवसाय भी ग्रामीण क्षेत्रों में किया जाता है जिसके लिए हस्त कौशल की अधिक आवश्यकता होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में नौकरी का विकल्प मौजूद है। ग्रामीण क्षेत्रों में सभी अभिभावक साक्षर नहीं होते है इसलिए वह अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति ज्यादा जागरूक नही हो पाते हैं। अत: इस क्षेत्र में रहने वाले विद्यार्थी स्वंय ही अपनी शिक्षा के प्रति जिम्मेंदार होते हैं।

सुझाव - विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता के स्तर को ज्ञात कर विद्यार्थियों के शैक्षिक चिंता को कम करने के लिए उन्हे शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श दिया जाना चाहिए। प्रत्येक विद्यार्थी को उनकी शैक्षिक चिंता से अवगत कराना चाहिए साथ ही विद्यालय में होने वाली शिक्षक अभिभावक सम्मेलन में इस विषय पर चर्चा की जानी चाहिए। शैक्षिक चिंता को सकरात्मक रूप में परिवर्तित कर इसका उपयोग विद्यार्थियों के हित में किया जा सकता हैं ।

संदर्भित ग्रंथ -

- Azeem, A. (2018). Study of Academic Anxiety and Academic Achievement Among Secondary School Students. *Journal Homepage: International Journal of Research in Social Sciences*, 8(3), 2249-2496.
- Chanchal, Singh, D. & Amita. (2021). Academic Anxiety and Academic Achievement among Secondary School Students. *International Journal of Humanities and Interdisciplinary Studies*. Special issue, National E-Conference Organized by Marudhara College, Hanumangarh, Rajsthan.62-66.
- Dutta, R., & Gogoi, K.P. (2015). Impact of Educational Anxiety on Academic Achievement. *International Journal of science Technology and Management*,4(11),274-283.
- Hassan, D. & Ravi, K. (2022). A Study of Relationship between Test Anxiety and Academic Achievement of Secondary School Students. *International Journal of Multidisciplinary Education Research*, 3(7).14-19.
- Khatoon, A. (2017). Academic Anxiety as a Correlate of Academic Achievement: A Study on Gender Basis. *International Journal of Scientific & Innovative Research Studies*, 5(9),1-8.
- Narayanswamy, M. (2019). Relationship between Academic Achievement and Academic Anxiety of Ninth Standard School Children. *International Journal of Creative Research Thoughts*, 7(2), 262-268.
- Rao, B.V.Ramana & Chaturvedi, A. (2017). Study the Academic Anxiety of Secondary School Students in Relation to Gender and Locality. *International Journal of Research in Humanities, Arts and Literature*, 5(12),59-62.
- Rehman, S.U., Javed, E. & Abdullah, M. (2021). Effects of Test Anxiety on Academic Achievement at Secondary School Level in Lahore. *Bulletin of Education and Research*, 43(3).67-80.
- Shakir, M. (2014). Academic Anxiety as a Correlate of Academic Achievement. *Journal of Education and Practice*, 5(10), 29-36.

- Sharma, S. & Shakir, M. (2019). A Study of Academic Anxiety of Senior Secondary school Students in Relation to Local and Type of School. Research and Reflection on Education, 17(4), 1-9.
- Sridevi, K. V. (2013). A study of relationship among general anxiety, test anxiety and academic achievement of higher secondary students. *Journal of Education and Practice*, 4(1), 122-131.
- अरूण कुमार सिंह, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियॉ, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, (2013). पृष्ठ- 224.
- अरूण कुमार सिंह, उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, (2013). पृष्ठ- 960.
- हेनरी ई.गैरेट, शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग, कल्याणी पब्लिशर्स, (2016). पृष्ठ - 399.
- एस.के. मंगल एवं शुभ्रा मंगल, व्यावहारिक विज्ञानों में अनुसंधान विधियॉ, पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, (2019). पृष्ठ - 622.
- सरीन एवं सरीन. शैक्षिक अनुसंधान एवं विधियॉ, अग्रवॉल पब्लिकेशन्स, (2012). पृष्ठ - 130.

प्रेषक

डॉ. प्रीति सिंह

सहायक प्राध्यापक

अध्यापक शिक्षा संस्थान

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर छ.ग.

मोबाइल नम्बर - 9754159769

Email id - singhpriti131@yahoo.com